आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:05-09-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को अपना सही परिचय देकर हमें परमात्मा ज्ञानी बनाने वाले, मीठे-मीठे बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - मैं जो हूँ, जैसा हूँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्युरेट जानते हैं. उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है.

आज बाबा ने सारी मुरली में आत्माओं और एक परमात्मा के बीच का अंतर स्पष्ट किया है. जो आत्माये यह अन्तर को पहचान सकती है वही सत्य स्वरूप बाप को कुछ हद तक समझने या कहे जानने में सफल हो सकती हैं.

- बाबा ने कहा, शिव भगवानुवाच. वह हुआ रुहानी बाप क्योंकि शिव तो सुप्रीम रुह है ना, आत्मा है ना. ऐसा कोई जीवात्मा अपने लिए कह न सके कि मैं सुप्रीम आत्मा हूँ.

- बाबा ने कहा, जो बड़े-बड़े विद्वान सन्यासी, गुरु आदि जो बहुत अच्छी गीता-भागवत-रामायण सुनाते है वह कभी भी शिव को बाबा कहेंगे नहीं यॉ फिर गीता का भगवान कृष्ण को समझ उनके साथ योग लगाते नहीं. वह तो है ही तत्व ज्ञानी. वह ब्रह्म को ही याद करते हैं क्योंकि उन्हें सत्य स्वरूप भगवान का सही परिचय मिलता ही नहीं. भगवान का सही परिचय तो स्वर्ग में आने वाले, भाग्यशाली गृहस्थ मार्ग वालो को ही मिलता है, वही स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा को "बाबा" कह कर याद करते हैं.

- हिन्दू धर्म में जितने भी देवी-देवताये है उनमें से किसी को भी "बाबा" शब्द युज कर बुलाते नहीं हैं. शिव को ही सब बाबा कहते हैं क्योंकि वह सब आत्माओं का बाप है. सब आत्माये उनको पुकारती हैं - परमपिता परमात्मा. वह है सुप्रीम, परम है क्योंकि परमधाम में रहने वाला है. हम सब आत्माये भी परमधाम में रहते है परन्तु उनको ही परम आत्मा कहते है.

- बाबा ने कहा, परमात्मा कभी पुनर्जन्म में नहीं आता हैं क्योंकि वह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते. उनका जन्म ही दिव्य और अलौकिक है. ऐसे कोई भी जीवात्मा (शरीर धारी आत्मा) अपने लिए ऐसा नहीं कह सकती कि मैं अन्य शरीरधारी को रथ बनाकर, उसमें

प्रवेश कर तुम बच्चों को पतित से पावन बनने का ज्ञान देकर विश्व का मालिक बनने का रास्ता बताता हूँ.

- बाबा कहते है, ऐसा एक परमात्मा बाप ही कह सकता है कि मैं ही आकर नई दुनिया स्थापन करता हूँ. तुम बच्चों को आत्मा, परमात्मा और इस सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान मैं अभी ही देता हूँ. कल्प के अन्त में जब सब आत्माये परमधाम चली जाती है तो यह ज्ञान गुम हो जाता है. इसलिए एक परमात्मा के सिवाय अन्य कोई जीवात्मा तो यह ज्ञान कभी दे नहीं सकती.

- बाबा कहते है, कोई भी जीवात्मा कभी ऐसा कह नहीं सकती की तुम स्वयं को आत्मा समझ मेरे साथ योग लगावों तो पतित से पावन बन जायेंगे. एक परमात्मा ही हम बच्चों को कहते है कि तुम खुद को आत्मा समझ मुझे याद करो तो पवित्र-पावन बन जायेंगे.

- बाबा कहते है, कोई भी जीवात्मा इस सृष्टि रुपी ड्रामा चक्र में बाप, टीचर और गुरु ऐसे तिन रोल एक जन्म में नहीं निभा सकती. एक परमात्मा ही है जो अभी हम बच्चों कि पिता के रुप में पालना करता, टीचर के रूप में ज्ञान देता और सतगुरु के रूप में वरदानों से शृंगार कर सच्ची सतगति प्रदान करता हैं.

- तब बाप कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी जान नहीं सकते, जब मैं, स्वयं आकर अपना परिचय दूँ तब ही मुझे जान सकते हैं. सब आत्माये तो बाप को नहीं पहचानेगी, कोटों में कोई है जो बाबा को सही रिती से जानते हैं.

यह ऐसी पॉइन्टस है जो हम किसी भी आत्माको सुनाकर, समझाकर, बाप में पुरा निश्चय बैठा सकते है.

ॐ शांति.